बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

कमला-बलानक तट पर तंत्र-नृत्य आ बलिदानक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : कमला-बलानक तट

कमला आ बलान धाराक संगममे बसल अछि एकटा एहन गाथा, जाहिमे नृत्य आ जादू, प्रेम आ प्रतिशोध, आ अन्ततः बलिदान — सभटा एक संग गुंथल छल। एक कात छलि बहुरा गोढ़िन — केवटीक बेटी, हक्कलि, कमरूसँ सीखल जादूक स्वामिनी। दोसर कात छलाह नटुआ दयाल — मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार, जे नृत्य सिखबाक क्रममे तांत्रिक बनि गेलाह।

ई गाथा जटिल अछि — जेना कमला-बलानक धार स्वयं जटिल अछि, कैक मोड़ लेने। एहिमे राजकुमारक साधना अछि, बहुराक क्रोध अछि, आ अन्तमे एकटा एहन बलिदान, जकर वर्णन आइयो साओन-भादवक रातिमे कमला-बलानक तटपर सुनाइ पड़ैत अछि।

अध्याय १ : बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दयाल

चित्र 1

कमला-बलानक कातमे, बखरी-बेगूसरायक अंचलमे, रहैत छलि बहुरा गोढ़िन — एकटा केवटीक बेटी, नर्त्तकी, आ जादूक ज्ञाता। ओ हक्कलि छलि, ओकर जादू कमरू-कामरूपसँ सीखल, बड्ड शक्तिशाली।

मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार छलाह दुलरा दयाल — जे नृत्यक प्रति आकर्षित भऽ बहुरा लग नृत्य सीखए आयल। बहुरासँ नृत्य सीखलाक बाद सभ ओकरा 'नटुआ' नामसँ पुकारए लगलाह — नटुआ दयाल।

चित्र 2

नटुआ दयाल बहुरा गोढ़िनक प्रशंसक छलाह — मुदा ई प्रशंसा कलाक नहि, प्रेमक छल — ओ बहुराक पुत्रीसँ प्रेम करैत छलाह। ई प्रेम आगाँ चलि कऽ पूरा गाथाक केन्द्र बनल।

नटुआ दयाल स्वयं तांत्रिक बनि गेल छलाह — नृत्यक संगे-संगे तंत्र-विद्याक साधना सेहो अर्जित केलनि। हुनक गुरु छलाह मंगल — एकटा सिद्ध पुरुष, जिनक शक्ति अद्भुत छल — ओ आकाशमे बिनु खुट्टी धोती टाँगि सुखाबथि!

अध्याय २ : बहुराक शक्ति आ क्रोध

चित्र 3

बहुरा गोढ़िनक शक्ति असाधारण छल — ओ गाछकेँ हँकैत छलि। जकरा संग झगड़ा भऽ जाए, ओकरा ओ सुग्गा बना अपन पिंजरामे पोसि लैत छलि — क्रोध आ शक्तिक ई मिश्रण बहुराकेँ भयभीत करैवला बनओने छल।

बहुरा कमलाक कात रहैत छलीह आ भजन गबैत छलीह — 'कमलेक आसन, ओहीमे बास हे कमला मैय्या।' ओकर भक्ति आ शक्ति दुनू कमला मैयाक प्रति समर्पित छल।

चित्र 4

बहुरा अपन वरकेँ मारि जादू सिखने छलि — ई तथ्य ओकर चरित्रक जटिलता देखबैत अछि: ओ प्रेममयी सेहो छलि, आ भयंकरो।

जखन नटुआ दयाल — जे राजकुमार सेहो छलाह — बहुराक पुत्रीसँ विवाहक प्रस्ताव राखलनि, त' बहुरा ठुकरा नहि सकलि — राजकुमारक प्रस्ताव अस्वीकार करब कठिन छल। मुदा जखन बरियाती दरबज्जा लागल, त' कोनो कहा-सुनी भऽ गेल, आ बहुरा क्रोधित भऽ सभकेँ बत्तु बना देलक!

अध्याय ३ : व्यापारीक कुचक्र

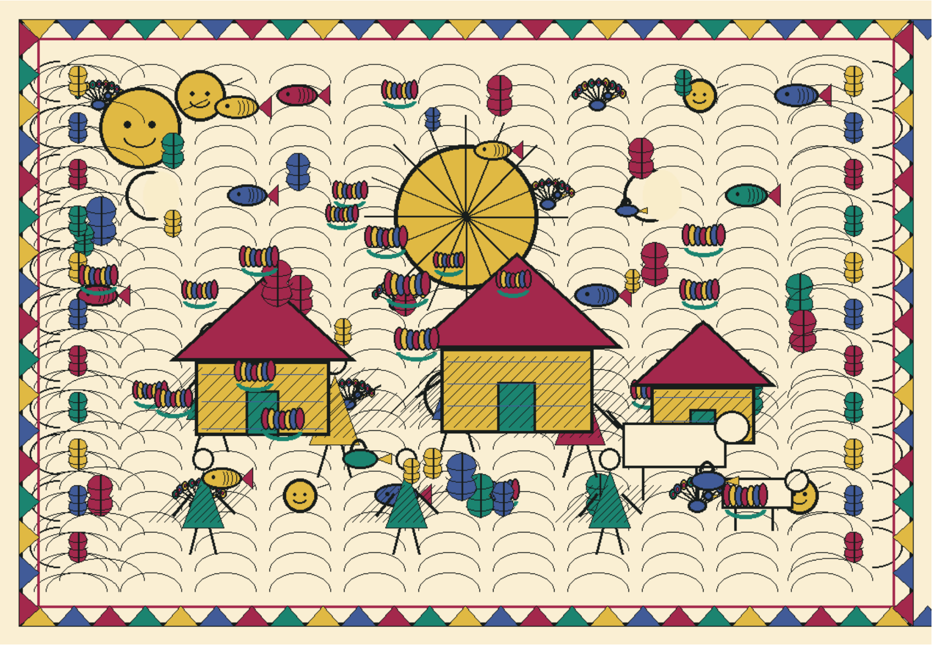

चित्र 5

एहि उपद्रवमे मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी खतम भऽ गेल — बहुराक जादूक प्रकोप निर्दोषोपर पड़ल। 'आहि रे बा' — पीड़ाक ई शब्द गाथामे बेर-बेर गूँजैत अछि, दुखक गहराइ देखबैत।

एहि सभटा उपद्रवक पाछाँ एकटा कुचक्र छल — व्यापारी जयसिंह, जे बहुराक बेटीपर मोहित छल, ओकरे षड्यन्त्र छल जे एहि पूरा घटनाक्रमकेँ जटिल बनओलक। स्वार्थ आ वासना बेशीकाल सत्य आ प्रेमक बीच बाधा बनि जाइत अछि।

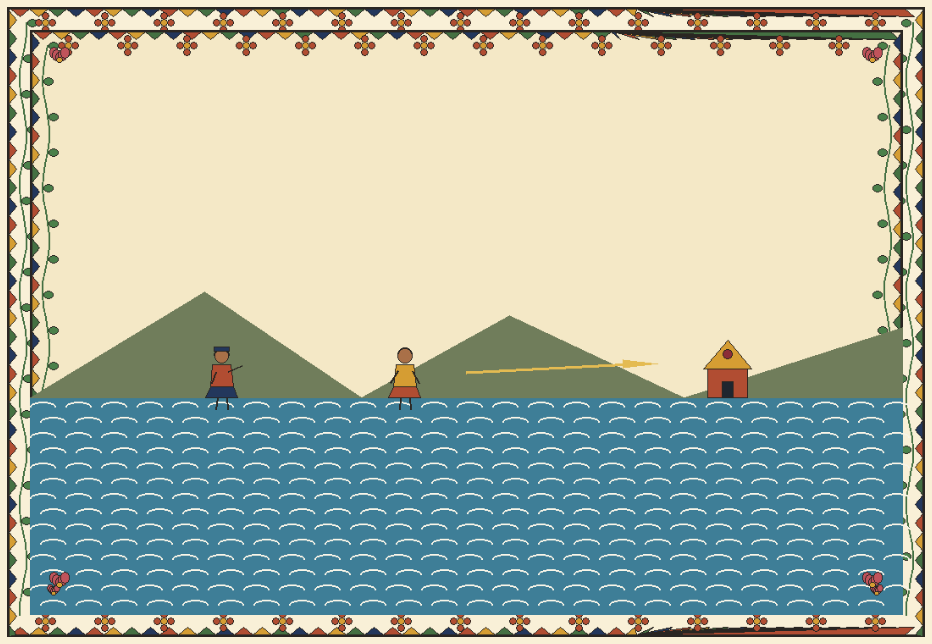

चित्र 6

'आहि रे बा' — फेर एक बेर पीड़ाक ई पुकार गूँजल, ई संकेत करैत जे स्थिति आरो बिगड़ल। एहि उलझनसँ बाहर निकलबाक एकमात्र रस्ता छल — उच्चतर साधना, गहींर तांत्रिक शक्ति।

नटुआ दयाल अपन गुरु मंगल लग गेलाह, समाधानक खोजमे। गुरुक आदेश स्पष्ट छल — 'जो कामाख्या, सीखय लेल षट् नृत्य आ जादू।' ई आदेश नटुआकेँ एकटा नव, कठिन साधनाक मार्गपर अग्रसर केलक।

अध्याय ४ : कामाख्याक साधना

चित्र 7

नटुआ दयाल कामाख्या गेलाह — तंत्र-विद्याक प्रसिद्ध केन्द्र। ओतय चण्डिका मंदिरमे योगिनी सभसँ षट्नृत्य सिखलनि — छह प्रकारक दिव्य नृत्य, जकर शक्ति साधारण नृत्यसँ बहुत ऊपर छल।

फेर आदेश भेल — सर्रैया ग्रामक भुवन मोहिनीसँ षट् नृत्यक एक अंग सिखबाक। नटुआक साधना क्रमशः गहींर आ जटिल होइत गेल, सभ चरणमे नव ज्ञान आ शक्ति अर्जित करैत।

चित्र 8

सरैया ग्रामक सिद्ध देवी छलीह वागेश्वरी — मुदा ओतय नरबलि चढ़ैत छल! दैत्य सभ अबैत छल! ई साधना-स्थल अत्यन्त भयावह छल, मुदा नटुआ निर्भय भऽ आगाँ बढ़ला।

एहि भयावह वातावरणमे नटुआ राजकुमार सिद्ध नृत्य 'अनहद' आ 'आज्ञा चक्र' सिखलनि — तंत्रक अत्यन्त उच्च स्तरक साधना। गुरु करिया जादूकेँ काटय बला मंत्र फुकलनि राजकुमारक कानमे — रक्षाक अन्तिम कवच।

अध्याय ५ : सूखल धार

चित्र 9

साधना पूर्ण कऽ नटुआ दयाल कमला-बलान लग आयल — अपन गन्तव्य दिस, अपन प्रेम आ अपन दायित्व दुनू पूरा करबाक लेल। मुदा बहुरा — जे अखनहुँ क्रोधित छलि — कमला धारक पानि सुखा देलक!

राजा -नटुआक पिता आ राज्यक शासक- जूकियाक गुप्तचरीसँ पता लगा बहुराकेँ पकड़ि अनलक। मुदा बहुरा चतुराइसँ दोष राजकुमारपर मढ़ि देलक — 'यज्ञ भेल तैयो कमलामे पानि नहि आयल, नटुआ पठेलक सभटा पानिकेँ पताल?'

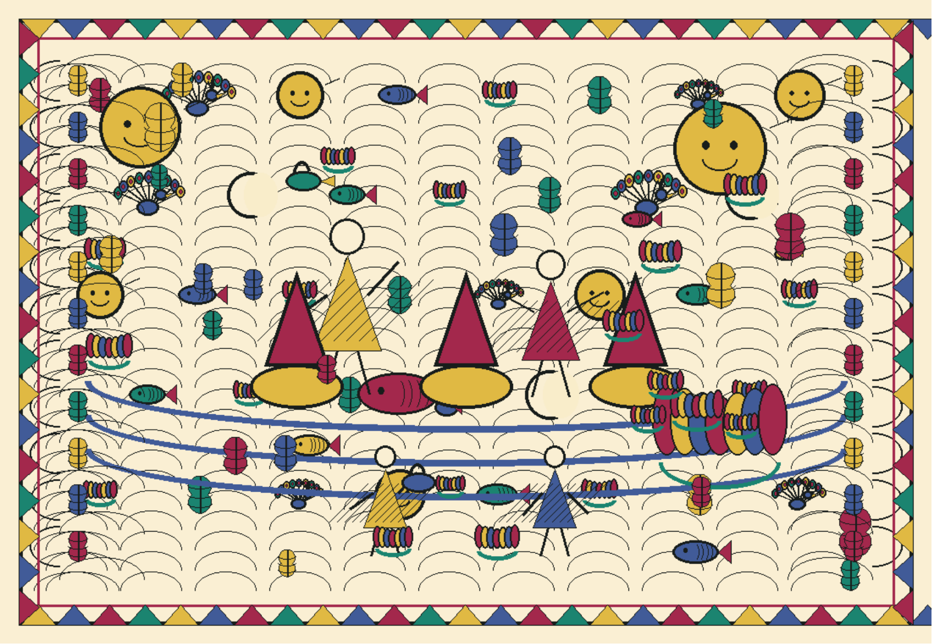

चित्र 10

ई आरोप गम्भीर छल — राजकुमारपर कमलाक पानि पातालमे भेजबाक इल्जाम! सत्य आ असत्यक बीचक ई उलझन नटुआकेँ फेर संकटमे धकेललक, भलहिं ओ निर्दोष छल।

नटुआकेँ पकड़ि आनल गेल — आरोप लगलापर। मुदा नटुआ अपन नृत्यक शक्तिसँ कमलाकेँ 'जलाजल' कऽ देलनि — अपन निर्दोषताक प्रमाण दैत। मुदा एहि विजयक क्षणमे सेहो नटुआ बहुरासँ माफी माँगलनि — क्षमाशीलता आ विनम्रताक ई भाव नटुआक चरित्रक विशेषता छल।

अध्याय ६ : बरियातीक तैयारी

चित्र 11

बहुरा नटुआक ई विनम्रता आ शक्ति दुनू देखि प्रभावित भेलि। ओ कहलनि — 'आब तोँ भेलह हमर बेटीक योग्य! आबह बरियाती लऽ कऽ।' अन्ततः बहुराक हृदय पिघलल, आ विवाहक अनुमति भेटल।

नटुआ बरियाती लऽ कऽ पहुँचल — प्रसन्नता आ उत्साहक बीच। तीन टा पान -शुभ कार्यक प्रतीक- अएलैक — एक कमलाक पानिक हेतु, दोसर बहुराकेँ माफ करबाक हेतु, आ तेसर ओकर बेटीसँ व्याह करबाक हेतु।

चित्र 12

ई तीन पान तीन विजयक प्रतीक छल — प्रकृतिपर, क्रोधपर, आ प्रेमपर। नटुआ तीनूटा पान उठओलनि, आ शुरू भेल गीत-नाद — विवाहक उल्लासमय क्षण।

मुदा एहि उत्सवक बीच एकटा साधारण घटना — नटुआकेँ पियास लागल, आ ओ अपन शिष्य झिलमिलकेँ इनार पर पठओलनि। ई छोट घटना आगाँ चलि कऽ एकटा पैघ त्रासदीक संकेत बनि गेल।

अध्याय ७ : डोरीक रहस्य

चित्र 13

झिलमिल इनार पर पानि भरए गेल, मुदा डोरी छोट भऽ गेलैक — पानि धरि नहि पहुँचल। ई एकटा साधारण असुविधा जकाँ बुझायल, मुदा एहिमे कोनो अदृश्य शक्तिक खेल छल।

अपने नटुआ पानि भरबाक लेल इनार गेलाह — आ ई निर्णय गाथाक अगिला मोड़क कारण बनल। जखन नटुआ गेलाह, त' डोरी अपने पैघ भऽ गेलैक — जेना कोनो अदृश्य हाथ ई सभटा नियन्त्रित कऽ रहल हो।

चित्र 14

एहि बीच फूलमती — नटुआक पहिल पत्नी — ओतय उपस्थित छलि, अपन पतिक प्रतिभासँ प्रसन्न।

बहुरा एहि बीच एकटा आर काज केलक — मल्ल मंत्रीक एक आँखिक रोशनी जे खतम भऽ गेल छल, ओकरा ठीक कऽ देलक — अपन पूर्व क्रोधक प्रायश्चित्तक रूपमे। ई देखबैत अछि जे बहुरा हृदयसँ दयालु छलि, खाली क्रोधमे भयंकर बनि जाइत छलि।

अध्याय ८ : कमलाक तटपर विवाह

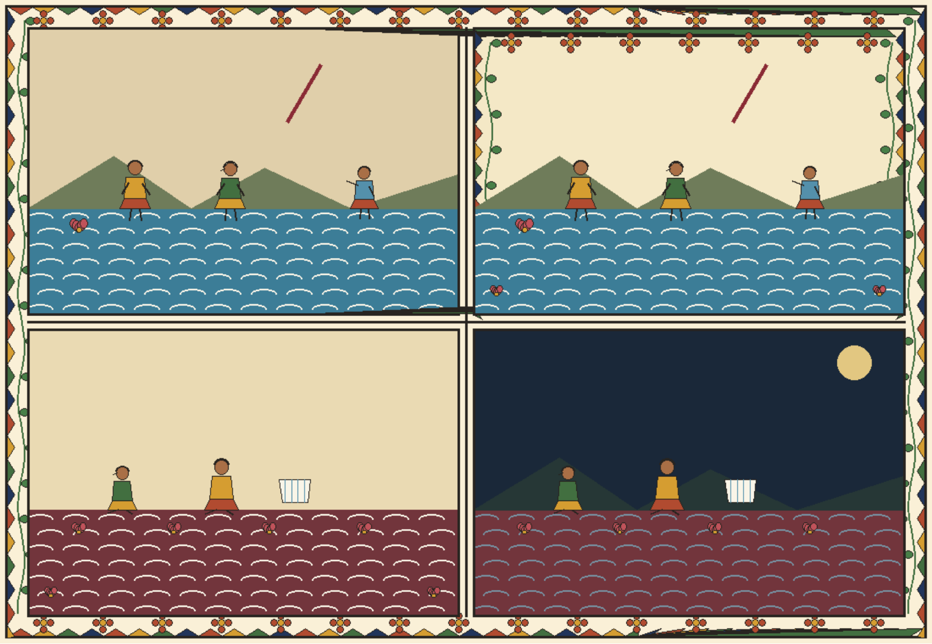

चित्र 15

नटुआ बहुराक बेटी संग कमला धारक तटपर पहुँचल — विवाहक अन्तिम विधिक लेल। सभ किछु शुभ लागि रहल छल, प्रसन्नताक वातावरण छल।

मुदा तखने — 'आहि रे बा!' — फेर एक बेर विपत्तिक पुकार गूँजल। नटुआकेँ चक्कू मारल गेल — बहुरासँ दूर भेल ओकर अपने शिष्य द्वारा! विश्वासघातक ई क्षण गाथाक सभसँ दुखद मोड़ अछि।

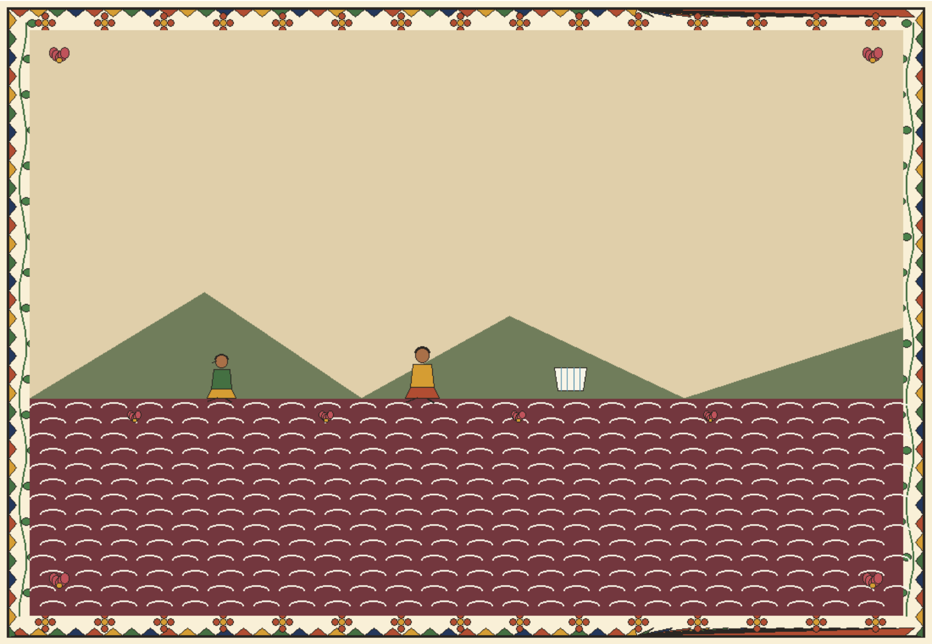

चित्र 16

मुदा नटुआ, घायल होइतो, अपन अन्तिम कर्तव्य पूरा केलनि — ओ पटोर -वस्त्र विशेष भेंट- कमला मैय्याकेँ चढ़ओलनि। मृत्युक मुखमे सेहो भक्ति आ कर्तव्यक ई निर्वाह असाधारण छल।

कमलाक धार खूने-खूनामे भऽ गेल — नटुआक बलिदानक साक्षी बनैत। ई दृश्य करुण आ भयावह दुनू छल, प्रेम आ बलिदानक चरम प्रतीक।

अध्याय ९ : कामाख्याक जादूगरनी

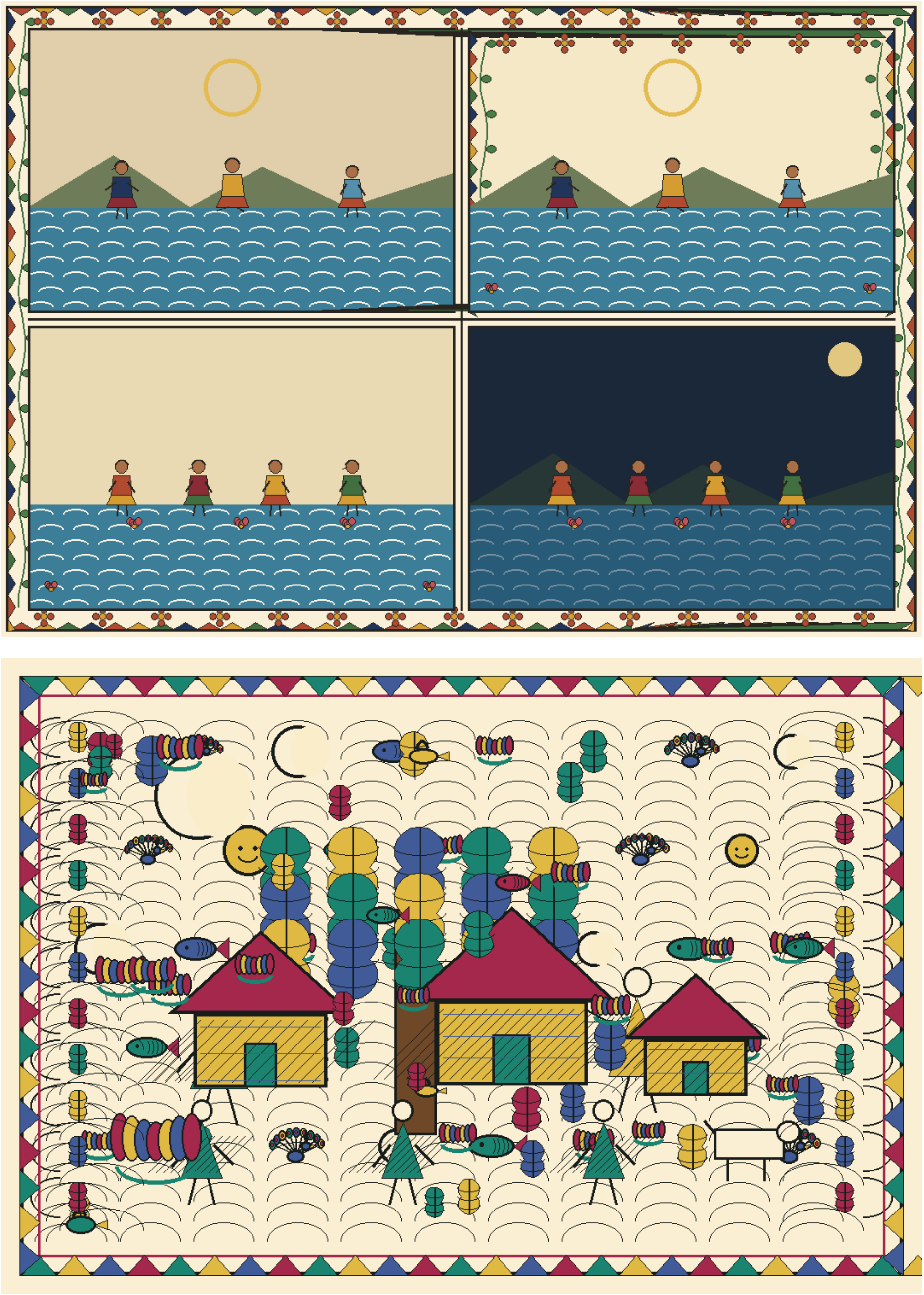

चित्र 17

मुदा गाथा एतय समाप्त नहि भेल। कामाख्याक जादूगरनी — जे नटुआक गुरुक परम्परासँ जुड़ल छलि, छलि एकटा दिव्य शक्ति — अएलीह आ नटुआकेँ जीवित कऽ देलनि। मृत्युसँ पुनर्जीवन, तांत्रिक शक्तिक चरम प्रदर्शन।

मुदा एहि पुनर्जीवनक मूल्य भारी छल — जादूगरनी दुश्मनक बलि कमलाकेँ चढ़ओलनि। ई प्रतिशोधक चक्र — विश्वासघातक बदला विश्वासघातीक बलिदानसँ — गाथाकेँ न्यायक एकटा जटिल रूप देलक।

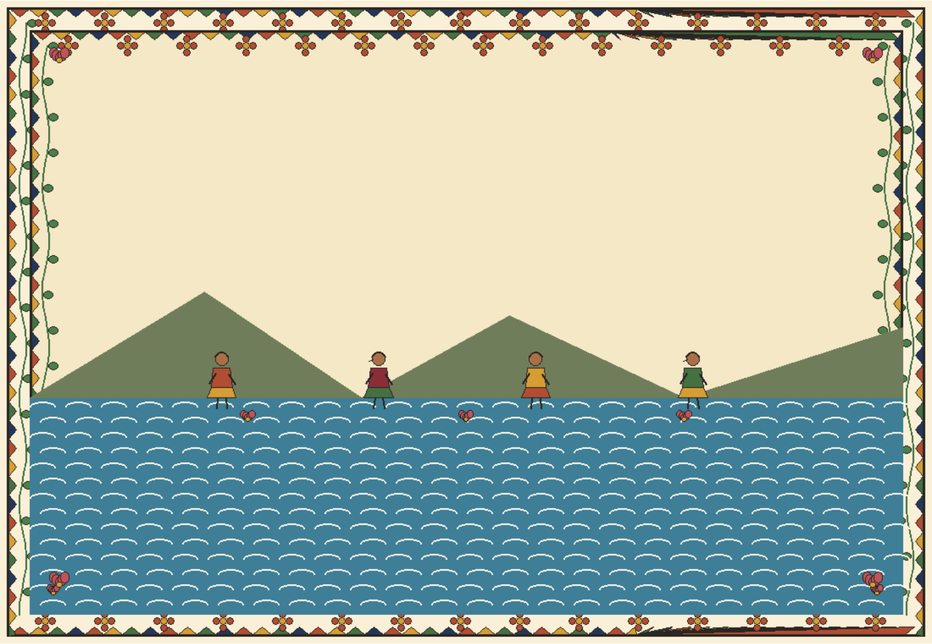

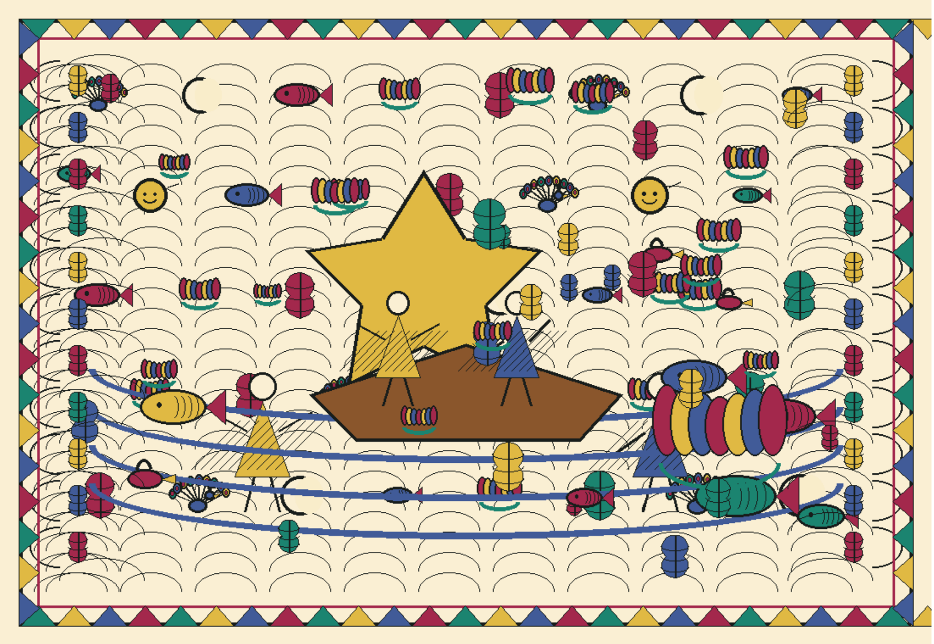

चित्र 18

ई गाथा एहि तरहेँ प्रेम आ प्रतिशोध, नृत्य आ तंत्र, बलिदान आ पुनर्जीवनक जटिल मिश्रण छोड़ि जाइत अछि — कोनो सरल सुखान्त नहि, मुदा एकटा एहन अन्त जतय न्याय अपन तरीकासँ पूर्ण होइत अछि।

आइयो कमला-बलानक कातमे लोक ई गाथा सुनबैत अछि — बहुरा गोढ़िनक शक्ति, नटुआ दयालक साधना आ बलिदान, आ कामाख्याक जादूगरनीक अन्तिम न्यायक कथा — तंत्र-विद्या आ प्रेमक ई जटिल संगम मिथिलाक लोककथाक अमूल्य धरोहर बनि गेल अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in